Dr. Sunil Kr. Suman
~~Assistant~~
Assistant Professor (Guest)
D.B. college Jaynagar
Deptt. of Psychology

Date - 02-12-2020

B.A. Part-I
Paper-I

डॉ सुनील कुमार सुमन
सहायक प्रोफेसर (अतिथि)
डी०बी० कॉलेज जयनगर
मनोविज्ञान विभाग

Study Material
Lecture No. - 03 & 04

Conditioning (अनुबन्धन)

Q. What is conditioning. (अनुबन्धन क्या है)। Explain the classical conditioning. प्राचीन अनुबन्धन की व्याख्या करें।

James Drever (1968) के अनुसार 'conditioning "अनुबंधन वह प्रक्रिया है जिसमें एक उत्तेजना वस्तु अथवा परिस्थिति के द्वारा एक प्रत्युत्तर प्रकट होता है, इसके अतिरिक्त यह प्रत्युत्तर एक प्राकृतिक अथवा सामान्य प्रत्युत्तर है।"

इसे हम सामान्य रूप से देखें तो उत्तेजना एवं अनुक्रिया के बीच साहचर्य स्थापित होना ही अनुबंधन (conditioning) है।

हल, स्पेन्स तथा गथरी एवं स्कीनर के अनुसार साहचर्य उद्दीपक व अनुक्रिया के मध्य स्थापित होता है। इसमें विभिन्न मनोवैज्ञानिकों का विभिन्न मत है, Tolman, Koffka Kohler आदि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार उद्दीपक, उद्दीपक के मध्य संबंध स्थापित करता है।

इसमें एक रोचक तथ्य है कि अनुबन्धन conditioning मनोवैज्ञानिकों की खोज नहीं है। ~~स्वामि~~ ब्लादिमीर बेखतेरेव (Vladimir Bekhterev, 1857-1927) द्वारा प्रतिपादित "(Association Reflex)" प्रत्यय ~~C~~ conditioned Response CR का मूल प्रत्यय है।

प्रायोगिक संक्रियाओं के आधार पर अनुबंधन (conditioning) दो प्रकार के होते हैं।

1. classical conditioning (प्राचीन अनुबंधन) (आद्यानुबन्धन)
2. Instrumental conditioning (नैमित्तिक अनुबंधन)

P.T.O

classical conditioning (प्राचीन अनुबंधन):-

classical conditioning के मुख्य प्रयोगकर्ता पैवलाव (pavlov, 1849-1936) है। जिन्हें (father of conditioning) (अनुबन्धन का पिता) कहा जाता है pavlov ने इस विधि पर कार्य करने के लिए एक विभिन्न प्रयोग किया। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग कुत्ता पर किया। ऑपरेशन द्वारा कुत्ते के जबड़े में एक रबड़ की नली को इस प्रकार फिट किया गया की पैरोटीड ग्रंथि से निकालने वाली लार नली से होकर बाहर जाए। इससे एक बूंद लार के दसवें भाग का मापन किया जा सकता था। इस प्रयोग में कुत्ते को ठीक ढांचे शिकंजे में बांधकर तथा भूखा रखकर ध्वनि यंत्र से ध्वनि उत्पन्न की गई। ध्वनि उत्पन्न होने के 8 सेकंड बाद उसे मीट पाउडर भोजन दिया गया। प्रतिदिन इस प्रकार तीन प्रयास कराया गया, लेकिन तीसरे प्रयास में केवल 30 सेकंड तक ध्वनि उत्पन्न की जाती थी, परन्तु भोजन नहीं दिया गया। प्रारंभ में घंटी बजने पर लार स्राव नहीं करता था, लेकिन चौथी बार घंटी बजने के बाद 18 सेकंड बाद कुत्ते ने 60 बूंद का लार स्राव किया। इस लार स्राव को conditioning salivation कहा गया। प्रयासों में वृद्धि के साथ साथ घंटी (अस्वाभाविक उत्तेजना CS) और लार (saliva) (स्वाभाविक प्रतिउत्तर UR) के मध्य समय कम होता गया। इस संपूर्ण प्रक्रिया या अनुबंधन को इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं।

प्रथम अवस्था - प्रशिक्षण से पहले

CS घंटी - भोजन → UR (लार)

द्वितीय अवस्था - प्रशिक्षण के बाद

CS घंटी → UR (लार) अनुबन्धन स्थापित हो गया अर्थात घंटी बजने के बाद तथा भोजन देने से पूर्व ही कुत्ता लार स्राव करने लगा था। इस प्रकार प्राचीन अनुबन्धन में दो प्रकार की उत्तेजनाओं व अनुक्रियाएं देखने को मिली। CS तथा UCS यानी (conditioned stimulus तथा unconditioned stimulus तथा दूसरी तरफ CR तथा UCR यानी conditioned Response व unconditioned Response

Next days